भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 2104
4 अगस्त, 2022 को उत्तर दिए जाने के लिए

महासागरीय संसाधनों का दोहन

2104. श्रीएन. आर. इलांगो:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने देश के महासागरीय संसाधनों की विशाल क्षमता का दोहन करने के लिए कोई पहल की है; और

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) जी हाँ। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने महासागरीय संसाधनों की क्षमता का दोहन करने के लिए कई पहल की हैं।

(ख) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की "महासागर-सेवाएं, मॉडलिंग, अनुप्रयोग, संसाधन और प्रौद्योगिकी (ओस्मार्ट)" और "डीप ओशन मिशन (डीओएम)" योजनाओं के तहत, ऊर्जा, मत्स्य पालन और खनिजों के लिए संसाधन सूची तैयार करना शुरू किया गया है। भारत सरकार ने केंद्रीय हिंद महासागर बेसिन (CIOB) से पॉलीमेटेलिक नोड्यूल्स की खोज के लिए 2002 में अंतर्राष्ट्रीय सीबेड अथॉरिटी (ISA) के साथ 15 साल के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। भारत द्वारा केंद्रीय हिंद महासागर बेसिन के 75000 वर्ग किमी क्षेत्र में व्यापक सर्वेक्षण और अन्य विकास गतिविधियां की गई हैं। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने 2016 में अंतर्राष्ट्रीय सीबेड अथॉरिटी (आईएसए) के साथ हस्ताक्षरित 15 साल के अनुबंध के तहत हिंद महासागर के सेंट्रल इंडियन रिज (सीआईआर) और साउथ वेस्ट इंडियन रिज (एसडब्ल्यूआईआर) क्षेत्र के साथ 10,000 वर्ग किलोमीटर के आवंटित क्षेत्र में पॉलीमेटेलिक सल्फाइड की खोज के लिए पॉलीमेटेलिक सल्फाइड से संबंधित अन्वेषण और अन्य विकासात्मक गतिविधियां शुरू की हैं।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान (NIOT) ने समुद्री संसाधनों का दोहन करने के लिए मानव रहित दूर से संचालित सिस्टम विकसित, प्रदर्शित और संचालित किया है। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सेंटर फॉर मरीन लिविंग रिसोर्सेज एंड इकोलॉजी (CMLRE) ने मरीन लिविंग रिसोर्सेज प्रोग्राम (MLRP) के तहत गहरे समुद्री सजीव संसाधनों की खोज की। यह कार्यक्रम, भारतीय पारिस्थितिकी तंत्र समुद्र से गहरे समुद्र क्षेत्र और उनसे संबन्धित संसाधनों के दोहन के लिए टैक्सोनॉमिक सूचना और प्रौद्योगिकी के विकास के दस्तावेजीकरण की नियमित निगरानी को कवर करता है ।

खनन मंत्रालय के तहत भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) ने चूना, भारी खनिज प्लेसर [इल्मेनाइट, मोनाजाइट, रूटाइल, सिलिमेनाइट, गार्नेट, जिरकोन], और विनिर्माण रेत जैसे समुद्री खनिज संसाधनों के लिए भारत के अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) के भीतर संभावित अपतटीय क्षेत्रों का सीमांकन कर दिया है। मत्स्य पालन विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय ने धारणीय तरीके से समुद्री मत्स्य पालन के विकास के लिए पिछले कुछ वर्षों में कई पहलें की हैं।

*****